

इस शोध से अल्जाइमर को जड़ से खत्म करने में मिलेगी मदद IIT इंदौर की खोज : पेट के बैक्टीरिया से अल्जाइमर और कैंसर की आशंका

भास्कर संवाददाता | इंदौर

आईआईटी इंदौर और चोइथराम हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर ने मिलकर एक शोध किया है। पेट में पाए जाने वाले बैक्टीरिया हेलिकोबैक्टर पाइलोरी (एच पाइलोरी) का सीधा संबंध अल्जाइमर बीमारी के साथ पाया गया है। शोध में साबित किया गया है कि इस बैक्टीरिया की संख्या बढ़ जाने और पेट के अच्छे बैक्टीरिया खत्म हो जाने पर व्यक्ति को कैंसर होने की आशंका तो बनती ही है, इससे निकलने वाला फ्लूइड गट-ब्रेन एक्सिस को बदलकर मस्तिष्क के भावनात्मक और संज्ञानात्मक हिस्से तक पहुंचता है और अल्जाइमर पैदा कर सकता है।

यह शोध वैज्ञानिक जर्नल 'वायरलेंस' के जनवरी अंक में प्रकाशित हुआ है। शोध का नेतृत्व आईआईटी इंदौर के बायोसाइंसेज और बायोमेडिकल इंजीनियरिंग विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. हेमचंद्र झा और इंदौर के चोइथराम हॉस्पिटल एंड रिसर्च सेंटर के डॉ. अजय कुमार जैन ने किया है। डॉ. झा की टीम इस विषय पर 3 साल से शोध कर रही है। उनकी टीम में मीनाक्षी कंडपाल भी शामिल हैं। डॉ. झा ने बताया कि इस शोध के माध्यम से हम अल्जाइमर बीमारी का कारण पता कर पाए हैं। अल्जाइमर जैसी बीमारी क्यों होती है, इसके बारे में वैज्ञानिक जगत में स्पष्ट जानकारी नहीं है। एच पाइलोरी के अल्जाइमर के साथ संबंध पता चलने पर अब इस बीमारी को ठीक करने के लिए दवाई बनाई जा सकती है, जो सिर्फ अल्जाइमर के लक्षणों पर नहीं बल्कि उसे जड़ से खत्म करने का काम कर सकती है। वर्तमान में इस दवाई पर शोध लैब में किया जा रहा है और आने वाले समय में जानवरों पर इसका शोध किया जाएगा।



शोध करने वाली आईआईटी इंदौर की टीम।

इसलिए घातक है एच पाइलोरी बैक्टीरिया

एच पाइलोरी बैक्टीरिया काफी घातक है। इसकी संख्या पेट में बढ़ जाने पर या अच्छे बैक्टीरिया की संख्या घटने पर गैस होने लगती है। आगे चलकर यह अल्सर में बदल जाता है और उसके बाद धीरे-धीरे कैंसर हो सकता है। एच पाइलोरी बैक्टीरिया को सीधे तौर पर गैस्ट्रिक कैंसर के साथ जोड़ा गया है। इस घातक बैक्टीरिया से निकलने वाले स्नायु गट-ब्रेन एक्सिस को बदलते हैं और मस्तिष्क से निकलने वाली सबसे लंबी नसों में से एक के माध्यम से मस्तिष्क में प्रवेश कर सकते हैं। इससे न्यूरो-संबंधी बीमारियों को बढ़ने में मदद मिलती है। टीम ने पता किया है कि भारत में 80-90% लोगों के शरीर में एंटी माइक्रोबियल रेजिस्टेंस काफी बढ़ चुका है। यानी कई ऐसी दवाएं हैं जो भारतीय लोगों पर असर नहीं करती। ऐसे में नई दवाओं का अविष्कार करना बेहद जरूरी हो गया है जो एच पाइलोरी बैक्टीरिया के घातक इन्फेक्शन पर प्रभावी हो। ये शोध उसी दिशा में एक कदम साबित हो सकता है।